One day training programme on "Nursery Techniques and Cultivation of Medicinal Plants" Organised by HFRI, Shimla at VVK, Jammu on 02.12.2016

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized one day training programme, in collaboration with State Forest Research Institute, Jammu, on "**Nursery Techniques and Cultivation of Medicinal Plants**" for the benefit of farmers of Jammu region on 2nd December 2016 at Van Vigyan Kendra of HFRI at Janipur, Jammu (J&K). Total 36 (thirty six) farmers from different parts of Jammu region participated in this training programme. The Krishi Vigyan Kendra (KVK) of Sher-e-Kashmir University of Agricultural Sciences & Technology, Jammu also played an important role in contacting the farmers to participate in this training programme.

Sh. S.P. Negi, Conservator of Forests & Head, Agro-Forestry & Extension Division, HFRI, Shimla, while welcoming the farmers, guests & resource persons in the training programme, apprised the farmers about the research activities being carried out by the institute in Himachal Pradesh and Jammu-Kashmir. He further informed that the extension of the results of diverse research activities carried out by HFRI to the various stakeholders including the farmers is one of the primary mandates of HFRI.

Sh. B.M. Sharma, Director, State Forest Research Institute, Jammu (J&K) inaugurated the training programme. In his inaugural address, Sh. Sharma lauded the effort of Himalayan Forest Research Institute to carry out research on various forestry issues including medicinal plants as well as reaching out to the farmers in the state of Himachal Pradesh and Jammu-Kashmir. He told that medicinal plants are not only important in Ayurveda but are also in wide use in Allopathy, Homeopathy and other systems of medicines. He emphasized the large-scale cultivation of medicinal plants and motivated the farmers to diversify their income through medicinal plants cultivation in combination with existing crops.

Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F, HFRI, Shimla proposed vote of thanks in the Inaugural session. He thanked SFRI, Jammu for providing logistic support to organize the training programme and KVK, SKUAST, Jammu for approaching the farmers of different areas of Jammu to make this training successful.

In the forenoon session, Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F, HFRI, Shimla made a presentation on the techniques of establishment of Kisan Nursery and production of vermi-compost/compost. He apprised the farmers about the benefits of vermi-composts/ compost in organic farming.

Dr. Puneet Chaudhary, Scientist, KVK, SKUAST, Jammu explained the farmers about important medicinal trees for income generation in Kandi area of Jammu. He also told about the cultivation techniques of important medicinal trees to the farmers so that the farmers can earn extra income through medicinal trees.

Dr. Suresh Chandra, Chief Scientist, Indian Institute of Integrative Medicine, Jammu explained about rural prosperity through minor forest products in Jammu to the farmers. He emphasized on income generation through the cultivation of medicinal plants.

In the afternoon session, Dr. Lalit Mohan Gupta, Senior Scientist, SKUAST, Jammu made presentation about diversification through medicinal plants cultivation in Kandi area of Jammu. He also informed about the availability of important medicinal plants in Jammu region to the farmers so that farmers can augment their income through diversification.

Dr. Jagdish Singh, Scientist-F, HFRI, Shimla explained about intercropping of medicinal plants for augmentation of rural income. He told that the farmers can use empty spaces in the orchard to raise medicinal plants so that production of the particular area will increase and farmers can earn more income in small area of land.

Finally, in the wrap-up session, Sh. S.P. Negi thanked all the participants for their active involvement during different lectures and hoped that the farmers will apply the knowledge gained in this training and will definitely get the benefits.

Some Glimpses of the Training Programme

Media coverage

भारतीय औषधीय पौधों की विश्व बाजार में बड़ी मांग

शिमला, 2 दिसम्बर (जस्टा): प्राचीनकाल से भारत में औषधियों का भंडार रहा है। आयुर्वैदिक चिकित्सा में इन पौधों का उपयोग दवाई के रूप में किया जाता रहा है। वर्तमान समय में इनकी कृषि की संभावनाएं और भारतीय औषधीय पौधों की विश्व बाजार में भी बहुत मांग बढ़ी है। निदेशक जम्मू-कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान बी.एम. शर्मा ने जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि औषधीय पौधों की पहचान बढ़ने में सामाजिक जीवन में उपयोगिता बढ़ गई है।

वर्तमान अंग्रेजी दवाइयों में 25 प्रतिशत भाग औषधीय पौधों का है तथा शेष कृत्रिम पदार्थ होता है। औषधीय पौधों की जो प्रजातियां उपयोग में लाई जाती हैं, वे पूर्णतय: प्राकृतिक हैं। उन्होंने औषधीय पौधों की वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि किसान इनका उत्पादन कर अपनी आर्थिक स्थिति के साथ-साथ देश की आर्थिक नींव मजबूत कर सकते हैं। शुक्रवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा पौधशाला तकनीक एवं औषधीय पौधों की खेती विषय पर किसानों के लिए एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 35 किसानों ने भाग लिया।

कल होगी बुशहर कल्याण सभा की बैठक

शिमला, 2 दिसम्बर (ब्यूरो): बुशहर कल्याण सभा शिमला की बैठक 4 दिसम्बर को होटल आशियाना में आयोजित होगी। बैठक का समय दोपहर बाद 2 बजे रखा गया है। इस बैठक में बुशहर कल्याण सभा के सभी पदाधिकारी भाग लेंगे।

पंजाब केसरी ई-पेपर Sat, 03 December 2016
epaper.punjabkesari.in//c/15130547

जम्मू 3/12/16

औषधीय पौधों की खेती से आय में होगी बढ़ोतरी

खेती में वैज्ञानिक तरीके अपनाने पर जोर

अमर उजाला ब्यूरो

जम्मू।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा पौधशाला तकनीक एवं औषधीय पौधों की खेती विषय पर जम्मू क्षेत्र के किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

हिमालयन वन अनुसंधान के सत्य प्रकाश नेगी ने प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि संस्थान ने जम्मू और लेह में क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित किया है। औषधीय पौधों की खेती से किसानों की आय में वृद्धि होगी। जम्मू कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक बीएम शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि आयुर्वेद के अलावा एलोपैथी दवाओं के निर्माण में भी औषधीय पौधों की मांग रहती है। उन्होंने औषधीय पौधों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि किसान इसका उत्पादन कर अपनी आर्थिक स्थिति के साथ साथ देश की अर्थ व्यवस्था में भी योगदान दे सकते हैं।

ई असेंबली प्रोजेक्ट की समीक्षा

जम्मू (ब्यूरो)। युवा सेवा एवं खेल विभाग के मंत्री मौलवी इमरान रजा अंसारी ने शुक्रवार को विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर ई असेंबली प्रोजेक्ट की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित विभागों से आईटी विभाग को समय पर आपत्तियां, जवाब और दूसरी सामग्री उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। ई असेंबली प्रोजेक्ट से पेपर वर्क को कम करके सारी प्रक्रिया कंप्यूटरीकृत की जाएगी। मंत्रियों को टैबलेट उपलब्ध करवाकर आपत्तियां, उनके जवाब दिए जाएंगे। समय की बचत को ऑनलाइन फार्मेट का इस्तेमाल किया जाएगा। सचिव आईटी ने कहा कि सब में वाईफाई उपलब्ध करवाई जाएगी।

किसानों को औषधीय पौधों की खेती का प्रशिक्षण

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने पौधशाला तकनीक एवं औषधीय पौधों की खेती विषय पर जम्मू क्षेत्र के किसानों के लिए जम्मू स्थित जम्मू-कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान में शुक्रवार को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में जम्मू क्षेत्र के लगभग 35 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक जम्मू-कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान बीएम शर्मा ने किया। शर्मा ने कहा कि प्राचीनकाल से भारत में औषधियों का भंडार रहा है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में इन पौधों का उपयोग दवाई के रूप में किया जाता रहा है। वर्तमान में इसकी कृषि की संभावनाएं और अधिक बढ़ गई हैं। उन्होंने औषधीय पौधों की वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस प्रशिक्षण में डा. संदीप शर्मा तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डा जगदीश सिंह, डा पुनीत चौधरी तथा डा ललित मोहन गुप्ता आदि ने किसानों को संबोधित किया। ब्यूरो

अमर उजाला, शिमला 3/12/2016

हिमाचल दस्तक, 3/12/2016

35 किसानों ने जम्मू में सीखे औषधीय खेती के गुर

शिमला। प्रदेश में औषधीय पौधों की खेती के लिए पड़ोसी राज्य जम्मू में प्रदेश के किसानों को ट्रेनिंग दी गई। दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में प्रदेश के 35 किसानों ने भाग लिया। यह ट्रेनिंग हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के अरण्यपाल सत्य प्रकाश नेगी ने बताया कि जम्मू तथा लेह में क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित कर दिए गए हैं। आने वाले समय में जम्मू-कश्मीर राज्य में जम्मू-कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान जम्मू के साथ मिलकर विभिन्न वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं को आरंभ करने जा रहा है। नेगी ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में औषधीय पौधों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया जाएगा।

3/12/2016

किसानों को दी औषधीय पौधों की जानकारी

जागरण संवाददाता, जम्मू : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की ओर से पौधशाला तकनीक एवं औषधीय पौधों की खेती विषय पर जम्मू क्षेत्र के किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। इसमें जम्मू क्षेत्र के लगभग 35 किसानों ने भाग लिया। सत्य प्रकाश नेगी , अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमाला ने प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया और संस्थान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह संस्थान पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर में वानिकी अनुसंधान का कार्य करता है। उन्होंने कहा कि संस्थान ने जम्मू तथा लेह में क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित कर दिए है। इसके अलावा आने वाले समय में प्रदेश में वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं को आरंभ करने जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ बीएम शर्मा, निदेशक जम्मू-कश्मीर राज्य वन अनुसंधान संस्थान ने किया। उन्होंने कहा कि प्राचीनकाल से ही भारत औषधि का भंडारण रहा है। वर्तमान समय में इसकी कृषि की संभावनाएं और अधिक बढ़ गई है।